

पुणीया श्रावक

एक बार श्रेणीक राजा नगर के बाहर उद्यान में बिराजित भगवान श्री महावीर के दर्शन करने जाते हैं। परमात्मा श्री महावीर को वंदन कर विनय पूर्वक उनके समक्ष अपना स्थान ग्रहण करते हैं। श्रेणीक राजा भगवान महावीर को अपने अंदर उठ रहे प्रश्न का उत्तर पूछते हैं।

राजा श्रेणीक :- भंते! मृत्यु के बाद मेरी कौनसी गति होगी?

परमात्मा महावीर:- पूर्व में पंचेन्द्रिय जीव की हिंसा के पाप के कारण तुम्हारा नरक गति में आयुष्य का बंध हुआ है।

Once king Shrenik asked Tirthankar Bhagwan Mahavir about the state of his soul after death, where would it go?

Mahavir swami replied : “You will go to hell on account of your past birth's violent deeds.”

केवल ज्ञान प्राप्त होने के बाद परमात्मा को सबकुछ ज्ञात होता है।

The Omniscient Lord knows the past, present and future of every living being.

राजा श्रेणीक :- भंते! मुझे अपने पापों से मुक्त होना है। क्या यह संभव है?

परमात्मा महावीर :- नगर में पुणीया श्रावक रहता है, जिसकी सामायिक की साधना सर्वश्रेष्ठ है। सामायिक करने से अनंत कर्मों का क्षय होता है। यदि तुम पुणीया श्रावक की एक उत्कृष्ट सामायिक का फल ला सको तो ले आओ।

The king wanted to know what he should do to avoid such a fate.

Mahavir Swami replied : “In this city lives a pious man named Punya who is known for his practice of



Samayik. Practicing Samayik deletes countless bad karmas. You can avoid going to hell provided you get the punya (good deeds) acquiring from one samayik of Punya Shravak.”

पुणीया श्रावक धर्म के प्रति अत्यंत श्रद्धावान थे और १२ व्रत के धारक थे। पति-पत्नी सुख और संतोष से रहते थे। रुई कांतकर अपना गुजारा चलाते थे। साधर्मिक भक्ति (किसी साधर्मिक को खाना खिलाना) के लिए दोनों एक एक दिन बारी बारी से उपवास करते थे।

Punya Shravak was a devout and staunch follower of Jainism. Punya Shravak and his wife were poor villagers by their own choice and yet were very happy. He earned his living by spinning cotton yarn in the house and selling it. They also had another vow to offer food to a Sadharmik (helping deserving people). As they could not afford this, he would fast one day and his wife would fast on the next day. Even during such difficult situations, they always offered their hospitality to fellow beings. In this way, the couple did Sadharmik Bhakti every day.



श्रेणीक राजा भगवान का कथन सुन पुणीया श्रावक के पास उसके घर आते हैं।

King Shrenik comes to Punya Shravak's place.

श्रेणीक राजा :- क्या तुम मुझे तुम्हारी १ सामायिक का फल दे सकते हो? बदले में मैं तुम्हें राजगृह नगरी और सोना महोरे दूंगा।

पुणीया श्रावक :- क्षमा करे राजन! मैं सामायिक कुछ पाने के लिए नहीं करता मगर मेरे आत्मा के कल्याण के लिए करता हूं। धर्म की क्रिया का फल बेचा नहीं जा सकता, किसीको दिया नहीं जा सकता। कर्मों का क्षय करने के लिए खुद साधना को करनी होती है।

The king approached Punya Shravak with the request, "will you give me the result of your samayik. In return ask whatever you want, your wish will be granted."



Punya Shrivak : " Please forgive me, O King! I do not practice samayik to gain anything for myself. I practice it to eradicate this divine soul from the shackles of karmas. You will have to bind your own good deeds. No one can sell the fruits of their good deeds. I too cannot, even if you pay me piles of money. "

श्रेणीक राजा सत्य की समज पा कर भगवान के पास आते हैं और उन्हें सारी हकीकत बताते हैं।

Shrenik realized that his entire wealth would not be able to buy even one samayik of Punya Shrivak. He felt the highest reverence for his devotion. He went to Bhagwan Mahavir.

भगवान महावीर :- वत्स! सामायिक की तुलना धन, नगर से नहीं की जा सकती है। सामायिक के फल की लेन देन नहीं हो सकती है। अपने कर्मों का फल स्वयं ही भुगतना पड़ता है। कर्मों का क्षय स्वयं ही करना पड़ता है।

Bhagwan Mahavir explained it differently.

He said : A Samayik cannot be compared with piles of gold or money. A living being undergoes the suffering or pleasures according to their merits and demerits. We ourselves have to get free from bondage of these Karmas.

सिख (Moral)

निकाचित कर्मों (अवश्य भुगतने पड़े वैसे कर्म) का फल भुगतना ही पड़ता है। अन्य कोई हमारी मदद नहीं कर सकता। साल भर रोज सुवर्ण दान दे फिर भी सामायिक का मुल्य नहीं हो सकता।

Scriptures say that if one donates gold everyday and the other performs Samayik, the one who donates gold cannot stand in comparison to the one who performs samayik.